

वर्ष: 9

अंक: 103

नवम्बर, 1996

राजभाषा पुष्पमाला



राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय भारत सरकार

राजभाषा पुष्पमाला

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय का मासिक पत्र

वर्ष: 9

अंक 103 नवम्बर, 1996

कार्तिक-अग्रहायण, 1918 (शक)

□ संपादक:

राज कुमार सैनी
निदेशक (अनुसंधान)
फोन: 4617807

□ उप संपादक:

सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा
फोन: 4698054
नेत्र सिंह रावत
फोन: 4698054

□ संपादन सहायक:

शांति कुमार स्थाल
फोन: 4698054

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।



पत्र-व्यवहार का पता:

संपादक, 'राजभाषा पुष्पमाला',
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन, (द्वितीय तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

अनुक्रम

पृष्ठ

□ वेद में दूत के गुण और योग्यताएं	—डा० उर्वी	2
□ वैज्ञानिक हिंदी: अतीत और वर्तमान	—डा० मुकुल चंद पांडेय	5
□ इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह		7
□ कार्यशालाएं:		10
लोक निर्माण विभाग (अंचल-1) नई दिल्ली; भारत हैवी प्लेट एण्ड वेसल्स लिमिटेड, विशाखापट्टनम; भारतीय जीवन बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय; भोपाल; हिंदुस्तान जंक लिमिटेड, दरौबा खान; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कानपुर।		
□ हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास:		17
केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल; विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर; विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर; प्रगतिशील आशु-टंकक संघ, केनाल कालोनी, हनुमानगढ़; आकाशवाणी, रोहतक; दूरसंचार जिला प्रबंधक का कार्यालय, कारवार।		
□ विविधा:		18
कम्प्यूटर पाठ्यक्रम अब हिंदी में भी; तमिलनाडु में अंग्रेजी-विरोध; पी एच डी के लिए किसी भारतीय भाषा में भी सारांश लिखा जाना अनिवार्य किए जाने की आवश्यकता; भर्ती परीक्षाओं में हिंदी का विकल्प; अफ्रीका संसद में हिंदी, लुपथथांसा उड़ानों में हिंदी; बैंकों में हिंदी कम्प्यूटरीकरण; पूर्व रेलवे, हावड़ा में राजभाषा प्रचार संगोष्ठी; नराकास जबलपुर की 28वीं बैठक सम्पन्न; इफको—कांडला में हिंदी कम्प्यूटर प्रशिक्षण; बैंकों में हिंदी प्रयोग हेतु राजभाषा अधिकारियों की अहम् भूमिका।		
□ आदेश-अनुदेश:		22
□ पुस्तक-समीक्षा		
जीवन-डिब्बों में ताक-झांक करती कहानियां (किसके लिए) (डा० रत्न लाल शर्मा/डा० ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश')		
□ दो कविताएं: माधवी सिंह		27
□ भाषायी अनेकता में एकता		

वेद में दूत के गुण एवं योग्यताएं

डा० उर्वी

व्यक्तिगत कार्यों में तथा राजकार्यों में दूत का बहुत महत्व है। जो बात हम किसी से स्वयं कहने में समर्थ नहीं होते उसके लिए दूत को भेजा जाता है। प्राचीन प्रेम प्रसंगों में ऐसी बहुत कथाएं मिलती हैं जिसमें प्रणयी जन दुओं के माध्यम से अपनी बात एक दूसरे तक गोपनीय रूप से पहुंचाते हैं। बहुत बार कवियों ने निर्जीव वस्तुओं को भी दूत बनाकर अपनी भावनाएं प्रकट की हैं। कालिदास का मेघदूत इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

वेदों में अग्नि को दूत कहा गया है "अग्निर्देवानां दूत आसीत्" (अग्नि देवों का दूत था।) दूत स्वयं गतिशील होता है, उसके अनुचर भी गतिशील होते हैं। यास्क की परिभाषा के अनुसार अग्निः अग्रणीर्भवति (अग्नि आगे ले जाता है), दूत भी 'अग्रणी' है क्योंकि वह आगे चलकर नेतृत्व करता है। यह मनुष्यों द्वारा दी गई हवि (सन्देश) को देवों (दूसरे राष्ट्र) तक पहुंचाता है। अग्निरूप दूत ज्ञान से तेजस्वी होता है। यह अग्निरूप दूत 'रयिर्पति' है। इसके पास बहुत धन होता है। यह दूत कविक्रतुः (कविः-क्रान्तदर्शी) चित्रश्रवस्तमः है¹ अर्थात् यह दूत दूरदर्शी है और अद्भुत यश से युक्त है। कार्य को करने से पहले उसका परिणाम जान लेता है, तत्पश्चात् कार्य करता है। दूत विविध प्रकार के धनों वाला है। अभिप्राय यह है कि दूत को हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। वह स्वेच्छा से कहीं भी आ जा सकता है। अग्निरूप दूत बहुत ज्ञानी 'प्रचेता' है।² वह सदैव सतर्क रहता है, अपने आसपास के वातावरण के प्रति, अपने राज्य के प्रति वह सदैव सजग, सचेत रहता है। यह दूत "परि-भूः" है। यह अपने विभिन्न स्थानों पर फैले हुए कर्मियों द्वारा शत्रु के विषय में गुप्त जानकारी प्राप्त कर लेता है। इसके माध्यम से जानकारी प्राप्त करके दूत का स्वराष्ट्र शत्रु का पराभव करके अपने हिसारहित यज्ञकर्म को सफल करता है। यह यज्ञकर्म केवल भौतिक अग्नि में आहुतियां ही नहीं हैं अपितु सारे समाज की संगति और उन्नति यहां अभिप्रेत है। लोक में एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में जो जाता है और अपने राजाओं (शासकों) का सन्देश दूसरे राष्ट्र के अधिकारियों को उत्तम रीति से पहुंचाता है और अपने राष्ट्र का प्रचारदि कार्य जो उत्तम रीति से करता है वह उत्तम राजदूत कहलाता है।

ऐसा राजदूत अग्नि है— "अग्निर्देवानां दूत आसीत्"⁵ अग्नि देवों का दूत है, ऐसा तैत्तिरीय संहिता में कहा है।

एक उत्तम दूत में जो गुण एवं योग्यताएं होनी चाहिए, वे इस प्रकार हैं—

दूत, तेजस्वी, विद्वान् अपना उत्तम ज्ञान और धन देने वाला, सब प्रकार के ज्ञान व धन से युक्त हो अर्थात् उसे अपने राष्ट्र की तथा दूसरे राष्ट्र की भाषाओं का ज्ञान हो, संस्कृति का ज्ञान हो, राष्ट्र की भावनाओं, नीतियों, तथा योजनाओं का ज्ञान हो, जनमानस के विचारों का ज्ञान हो जिससे कि वह कहीं भी जाए तो अपने ज्ञान से सबको अपने राष्ट्र का बोध करा सके। वेद के अनुसार उसे धन का स्वामी होना चाहिए क्योंकि उसे कभी भी, कहीं पर भी गहन खोज के लिए अनेक साधनों की आवश्यकता पड़ सकती है धन पास रहने पर उसके लिए सब कार्य सरल हो जाता है। इस धन का प्रयोग वह अपने राष्ट्र के प्रचार हेतु दान देने के लिए भी कर सकता है। वह दूत यज्ञ को अच्छी प्रकार से पूर्ण करने वाला हो। यह यज्ञ संगतिकरण रूप यज्ञ है जिसका अभिप्राय है कि दूत अपने राष्ट्र की भावनाओं को दूसरे राष्ट्र में पहुंचाता है तथा दूसरे राष्ट्र की भावनाओं को अपने राष्ट्र में पहुंचाता है। एक दूसरे के सम्मान की भावना उत्पन्न करता है।⁶

वेद द्वारा निर्दिष्ट यह अग्निरूप दूत अपने कार्यों से सर्वप्रिय होता है। इस महत्वपूर्ण पद पर अपने राष्ट्र का सन्देश दूसरे राष्ट्र में ले जाता है तथा दूसरे राष्ट्र का सन्देश अपने राष्ट्र में पहुंचाता है। वह दूत अहिंसक यज्ञ वाला अर्थात् परस्पर मेल-मिलाप बढ़ाकर सब और हिसारहित वातावरण उत्पन्न करता है और परस्पर सौहार्द का सन्देश देता है। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य में नियुक्त अधिकारी के पास उत्तम कोटि के वाहन होने चाहिये जिससे उनके अभाव में उसका कोई कार्य न रुके।⁷

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में इस राष्ट्र के प्रतिनिधि की विशेषताएं बताते हुए कहा गया है कि वह तेजस्वी, गतिशील, अग्रणी—आगे बढ़ने वाला तथा आगे बढ़ाने वाला, प्राणिमात्र अथवा राष्ट्र का हित साधक, राष्ट्र का सम्मान

¹ तै० सं० 2-5-8-7

² ऋग्वेद 1-1-5

³ ऋग्वेद 7-4-4 "अयं कविरकविषु प्रचेताः

⁴ ऋग्वेद 1-1-4

⁵ तै० सं० 2-5-8-7

⁶ ऋ० 1-12-1 - "अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।"

⁷ जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽ मे रथीरध्वरागाम्। ऋ० 1-44-2